International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.167-174

कालिदास के ग्रंथों में नायिका का शृंगारिक पक्षः राजस्थानी कलाकारों की दृष्टि से

प्रीति यादव*

सार

भारतीय कला एवं साहित्य में कालिदास की रचनाओं की भूमिका उनकी विशिष्टता के द्योतक रहे हैं। कालिदास एक महान कवि, नाटककार, कला एवं संगीत के पारखी भी थे, जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। कालिदास ने मुख्य रूप से सात ग्रंथों की रचना की। जिसमें तीन नाट्य रचनाएँ एवं चार काव्य ग्रंथ शामिल हैं। प्रमुख नाट्य रचनाएँ– अभिज्ञानशाकुंतलम्, विक्रमोर्वशियम्, मालविकाग्निमित्रम् तथा ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, कुमारसंभवम् काव्य ग्रंथ के अंतर्गत हैं। कालिदास के इन सभी ग्रन्थों में नायिका के विभिन्न स्वरूप का अद्भुत संयोग झलकता है तथा अनेकों दशाओं का वर्णन परिलक्षित होता दिखाई पड़ता है। समाज की रचना तथा उसके व्यवस्थित विकास में भारतीय नारी की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। इस क्रम में उसके जीवन में शृंगार का स्थान सर्वस्व है। शृंगार एक नैसर्गिक प्रक्रिया है तथा इसकी अभिव्यंजना सौन्दर्य–बोध है। मानवीय सौन्दर्य को पुरुष एवं नारी सौन्दर्य में विभाजित किया गया है। एक का रूप सौन्दर्य, कोमलता और माधुर्य में है तो दूसरे का ओजस्विता और गाम्भीर्य में। वस्तुतः नायिका सौन्दर्य की केन्द्रबिन्दु है, इसलिए रूप शृंगार उसके सौन्दर्य को और मुखरित करता है, जिससे काम स्वयं उत्प्रेरित होता है। शृंगार से आकर्षण बढ़ता है, इसलिए नायिका अपने प्रियतम को स्वाभाविक रूप से कामोद्रेक के लिए उत्प्रेरित करती है। यह तो स्पष्ट है कि शृंगार एक कला है, जिसमें सौन्दर्य–बोध एवं प्रण्य भावनाओं का सुकुमार संगम होता है और इन्हीं को आधार मानकर साहित्यकारों एवं कलाकारों ने नायिका के शृंगार को अधिक प्रक्षय दिया है। इस प्रकार मैं अपने इस शोध–पत्र में कालिदास के ग्रंथों पर आधारित नायिका के शृंगारिक पक्ष का वर्णन राजस्थान के कलाकारों के दृष्टिकोण से उनकी कृतियों में दिखाने का प्रयास करूँगी। जिन्होंने नायिका के सौन्दर्य को अपनी दृष्टि से तूलिका के माध्यम से अपने चित्रों में दर्शाया है, जो कलाप्रेमियों और शोधार्थियों के लिए विशेष स्थान रखेगी।

शब्दकोशः *कालिदास, शृंगारिक नायिका, नायिका भेद, ऋतुसंहारम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्।*

प्रस्तावना एवं उद्देश्य

शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि– शृंगारिक नायिकाओं की पुष्टि करके तथा उनके सचित्र रूप के साथ–साथ कालिदास के काव्य एवं नाट्य ग्रन्थों पर आधारित राजस्थानी पारम्परिक कलाकारों की कृतियों में सौन्दर्यात्मक पक्ष का विश्लेषण किया गया है।

शृंगारिक नायिकाओं को राजस्थान के कलाकारों द्वारा भिन्न–भिन्न स्थितियों में चित्रित करने के लिए विविध रेखाओं, रंगों, रूपों एवं बनावट का प्रयोग किया गया है।

किसी भी देश की संस्कृति, सभ्यता का मूल वाहक उस देश का साहित्य होता है जिसमें उस देश की संस्कृतियों के उत्थान, पतन, परिवर्तन, परिवर्धन का इतिहास सुरक्षित होता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है।[1] इस प्रकार देखा जाए तो कालिदास का संस्कृत साहित्य में लालित्यपूर्ण, सरल, सरस और भाव–प्रधान काव्य रचना के क्षेत्र में स्थान सर्वोपरि है। यही कारण है कि चित्रकार प्रारम्भ से ही कालिदास की

* शोध छात्रा, कला इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

1 पाण्डेय, डॉ. मिथलेश, कालिदास ग्रंथावली, पृ0 70–74

सौन्दर्य दृष्टि से प्रभावित रहा और समय–समय पर उनकी रचनाओं में वर्णित प्रसंगों सौन्दर्यमयी रूप को प्रदान की करने को चेष्टा करता रहा, जो भारतीय जनमानस में अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं। मेरे इस शोध पत्र में राजस्थान के कुछ महत्त्वपूर्ण कलाकार लिए गये हैं, जो कई वर्षों से पारम्परिक लघु चित्रकला में अपनी दक्षता रखते हैं, जो निम्न हैं–

समन्दर सिंह खंगारोत 'सागर' (जयपुर), विरेन्द्र बन्नू (जयपुर), शरद भारती (उदयपुर) तथा पवन कुमार कुमावत (किशनगढ़)

समंदर सिंह खंगारोत 'सागर' (जयपुर)

राजस्थान के जयपुर में 15 अक्टूबर 1951 को महान कलाकार समंदर सिंह खंगारोत का जन्म हुआ। अपने गुरु कृपाल सिंह शेखावत के मार्गदर्शन में इन्होंने राजस्थान की परम्परावादी चित्रशैली में ख्याति अर्जित की। इन्होंने नायिकाभेद पर दर्जनों चित्र बनाये तथा कालिदास के ग्रन्थों पर भी चित्र बनाये। जिसके लिए वर्ष 1989 तथा 1991 में कालिदास अकादमी अवार्ड प्राप्त हुआ। इन्होंने लघु चित्रकला को अपने देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के माध्यम से एक नयी पहचान दिलाई। इन्हें कई पुरस्कार और सम्मान मिला। ये मार्च 1996 से जून 2002 तक राजस्थान ललित कला अकादमी के सचिव पद पर रहते हुए कई प्रदर्शनी, सेमीनार, कार्यशाला का आयोजन करवाये तथा एक नई दिशा दी।

शीर्षक– ऋतुचक्रम् (ऋतुसंहारम्)

माध्यम– वसली कागज पर टेम्परा

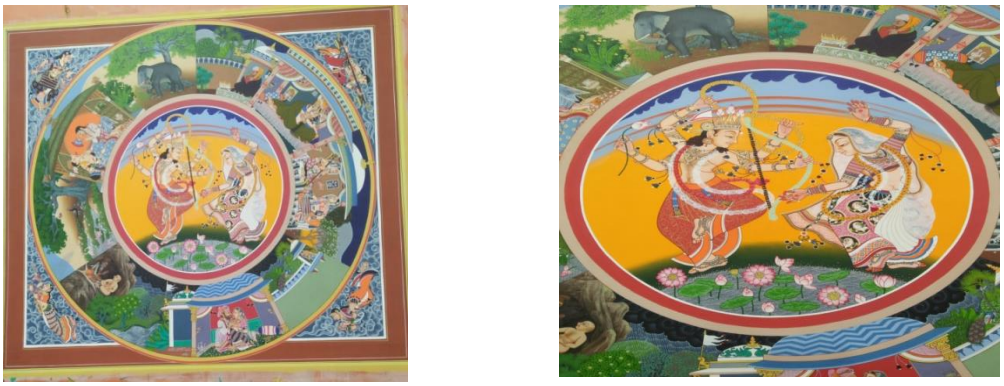

नृत्य करते रति और कामदेव

यह कालिदास के ऋतुसंहार पर आधारित पेंटिंग है। इसे चक्र के अंदर चित्रकार द्वारा तीन ऋतुओं को दिखाया गया– गर्मी, सर्दी तथा बरसात। तीनों ऋतुओं में स्त्री और पुरुष का कैसा सम्बन्ध होता है तथा उनके मनःस्थिति पर कैसे प्रभाव पड़ता है उसका यहाँ पर वर्णन देखने को मिलता है। वृत्त के अंदर जो दो युगल नृत्य कर रहे हैं, वह रति और कामदेव हैं। ऋतुओं का राजा बसन्त होता है और बसन्त के अंदर प्रत्येक जीव, पेड़–पौधे, प्राणी, मानव की भावनाएँ इस ऋतु में रोमांटिक हो जाती हैं। पहले के समय में बसन्तऋतु के समय ही पूरे भारतवर्ष में मधुमास एक त्यौहार मनाया जाता था, जिसमें 1 मास तक सभी लोग हर्ष और उल्लास के साथ इसका आनन्द लेते थे। चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक के काल में इसका सुन्दर वर्णन मिलता है। वृत्त में कामदेव और रति जो नृत्य कर रहे हैं वह आनन्द की पराकाष्ठा का प्रतीक हैं।

चक्र के चारों कोनों पर अप्सराएँ अलग–अलग यंत्र बजा रही हैं। चक्र के प्रथम भाग में गर्मी से राहत पाने के लिए लोग शीतल स्थानों की शरण लेते हैं। इसमें हरे–भरे पेड़ भी मुरझाए से प्रतीत हो रहे हैं, जिसकी डालियों पर पशु–पक्षी विहार कर रहे हैं, नीचे तालाब के किनारे मोर के पास एक मुर्गी बैठी हुई है। झोपड़ी के अंदर चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी का आनन्द लेते नायक–नायिका को दिखाया गया है। नायक अपनी नायिका को पंखा झल रहा है। दूसरी तरफ हाथी तपती धूप से बचने के लिए पेड़ के नीचे विश्राम कर रही है। चक्र के

द्वितीय भाग में शिशिर ऋतु का वर्णन है। इसमें एक नायक अकेले कंबल ओढ़े आग ताप रहा है और मन ही मन अपनी नायिका को याद कर रहा है। दूसरी तरफ नायक–नायिका सहवास कर रहे हैं तथा एक तरफ एक नायिका सितार और दूसरी मृदंग बजाने में व्यस्त हैं। इस ऋतु में मानव के मन में से उलझने, क्रोध, तनाव, छलकपट और संदेह के भावों की समाप्ति होती है।[1]

चक्र के तृतीय भाग में वर्षा ऋतु का वर्णन है। गर्मी से छुटकारा दिलाने वाली वर्षा ऋतु सभी को राहत प्रदान कर रही है। चारों तरफ हरियाली छायी हुई है। एक तरफ दो संत आपस में वार्तालाप कर रहे हैं दूसरी तरफ नायक अपनी नायिका के साथ काम वासना में लिप्त हैं तथा एक तरफ एक सुन्दर सी नायिका अपने झरोखे से झांक रही है। लाल तथा पीले वर्ण का संयोजन ज्यादा किया गया है, जो प्रेम का प्रतीक है।

शीर्षक –'ध्यानमग्नशिव' (कुमारसम्भवम्) :

माध्यम –वसली कागज पर टेम्परा

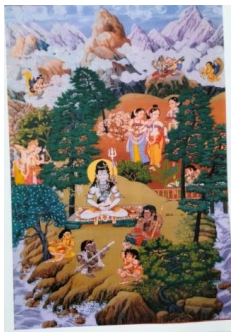

ध्यानमग्न शिव

हिमालय के बादलों में संगीत वादन करते गंधर्व और किन्नर

पूजा के लिए जाती हुई पार्वती

रति और कामदेव

कुमारसंभव में कार्तिकेय की उत्पत्ति के लिए देवताओं ने शिव को अराधना के माध्यम से यह युक्ति निकाली थी। जब देवताओं को राक्षसों ने स्वर्ग से भगा दिया तब सारे देवता सर्वप्रथम ब्रह्मा के पास गये परन्तु वहाँ उन्हें एक युक्ति मिली कि शिव और पार्वती से जो पुत्र उत्पन्न होगा वह तुम्हारा सेनापति बनेगा तो वही इन राक्षसों का संघार कर सकता है। शिव उस समय सती के वियोग में ध्यानमग्न थे। शिव को पूरे संसार से विरक्त हो गयी थी। सती का पुर्नजन्म पार्वती के रूप में हुआ। पार्वती महादेव को पुनः पाने के लिए घोर तपस्या करती थीं परन्तु शिव ध्यानमग्न थे, इसलिए देवताओं ने मिलकर काम और रति को उनका ध्यान भंग करने के लिए भेजा। जिससे उनका ध्यानभंग हो और वह पार्वती को देखें, उनके प्रति शिव का आकर्षण बढ़े और दोनों की शादी हो।

---

[1] पाण्डेय, डॉ. संतोष, कालिदास कलासुषमा, उज्जैन, पृ0 37

इस चित्र में शिव हिमालय पर घोर तपस्या में लीन हैं। गंधर्व व किन्नर हिमालय के बादलों में शिव वंदना व गायन कर रहे हैं। नियमित अपनी दो सखियों के साथ शिव पूजा को जाती पार्वती के कौमार्य का सौन्दर्य देखते ही बन रहा है। केले के वृक्ष के नीचे एक गढ़ चंदन का लेप तैयार कर रहा है वहीं नीचे की तरफ शिव के गढ़ नंदी व अन्य हैं, जिसमें कोई डमरू, कोई बांसुरी तथा कोई चुप करा रहा है कि शिव का ध्यान कहीं भंग न हो जाए, दूसरी तरफ सौन्दर्य के देवता काम और रति धनुष और तीर लिए खड़े हैं। कामदेव का धनुष आम की मंजरी का है तथा प्रत्यंचा भँवरों की है तथा तीर कमल नाल की व नुकीला भाग कमल का फूल है। कामदेव एक के बाद एक बाण छोड़ते जाते हैं और शिव के अन्दर एक सनसनाहट पैदा होती है और उनके मन के अंदर चंचलता आ जाती है, प्रेम उत्पन्न हो जाता है और वह आँखें खोलकर देखते हैं तो उन्हें पार्वती नजर आती हैं, जो उनकी पूजा कर रही होती हैं। उनको देखते ही शिव पार्वती पर पूर्ण रूप से मोहित हो गए और उनको प्रेम हो गया। फिर उनको ये लगा ये सब बात मेरे मन में आयी कैसे तब उन्होंने गर्दन उठाकर देखा तो कामदेव और रति दोनों खुश हो रहे थे, क्योंकि वह जिस प्रयोजन से आये थे उसमें उन्हें सफलता मिली। लेकिन शिव उनके ऊपर गुस्सा हो गए और अपना तीसरा नेत्र खोल करके कामदेव को भस्म कर दिया। रति बहुत रोयीं, चिल्लायीं, विनती की तब शिव जी कहते हैं कि अब ये रूप तो नहीं ले सकता लेकिन कृष्ण के बेटे अनिरूद्ध के रूप में इसका प्रभाव होगा। इसलिए कामदेव का कोई अंग नहीं है वह अनंग है। चित्र में एक तरफ प्रेम है तो दूसरी तरफ करुणा का भाव भी है। संयोजन, रंग सिद्धान्त का बहुत ही सुंदर अंकन किया गया है।

विरेन्द्र बन्नू : (जयपुर)

भारतीय लघुचित्रकला परम्परा में दक्ष 7वीं पीढ़ी के कलाकार विरेन्द्र बन्नू, जिनका जन्म 25 जनवरी, 1964 को जयपुर में हुआ। पढ़ाई के दौरान ही यूनिवर्सिटी द्वारा इन्हें 5 राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।1996 में राजस्थान की तरफ से झांकी तैयार की, जिसको 26 जनवरी, 1966 में राजपथ पर तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनके चित्र कई पुस्तकों के फ्रंट कवर पर छपी हैं। कई कार्यशालाओं और ग्रुप शो में इन्होंने पारम्परिक लघु चित्रकला में नायिका के विभिन्न स्वरूपों का विलक्षण संयोजन किया है। इनके संग्रह विदेशों में भी भारतीय लघु चित्रकला का शोभा बढ़ा रहे हैं। इन्होंने कालिदास के ग्रन्थ अभिज्ञानशाकुन्तलम् पर सुन्दर रचना की है।

शीर्षक– शुकन्तला (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

माध्यम– वसली कागज पर खनीज रंग

इस चित्र में शकुन्तला बैठी हुई है, जब राजा दुष्यन्त उन्हें छोड़कर अपनी राजधानी को चले जाते हैं, तो वह उनकी यादों में एकदम खो सी गयी हैं। उस समय उनको किसी भी चीज का भान नहीं रहता है, उनको खुश करने के लिए उनकी दो सखियाँ प्रियंवदा और अनुसूया उनके पीछे खड़ी होकर उनका मन बहलाने की कोशिश कर रही हैं परन्तु शकुन्तला अपना सुध–बुध खोकर बैठी हुई हैं, उन्हें अपने कपड़े का भी ध्यान नहीं है।

कपड़े का रंग भी प्रकृति से मिलता–जुलता दिखाया गया है। वह इतनी कोमल हैं कि जिस हाथ से उन्होंने अपने शरीर को टिकाया वह सुर्ख (लाल) हो गया है। श्रृंगार में शकुन्तला चूड़ियाँ, गले का हार, मांगटिका, पायल, बाजूबंद, कर्णफूल सभी फूलों का ही पहन रखी हैं। माथे पर चंदन का लेप लगा है और चंदन से ही इनके शरीर पर अलंकरण किया गया है, पीछे जो पीले रंग की आभा है वह चंदन की खुशबू को बिखेर रही है।कमल के पुष्प पर बैठी हुई अधरों को झुकाए अपने प्रियतम की लीलाओं का स्मरण कर रही हैं। उसी समय आश्रम में महर्षि दुर्वाशा ऋषि का आगमन हाता है परन्तु शकुन्तला को इसका जरा सा भी आभास नहीं हो पाता है। दुर्वाशा ऋषि आवाज लगाते हैं फिर भी उन्हें सुनायी नहीं देता है, तब उनकी सखियाँ उनके अवस्था से उन्हें अवगत कराती हैं और उस समय दुर्वाशा ऋषि क्रोध के कारण उन्हें शाप दे देते हैं कहते हैं– तू जिसके याद में इतनी विलीन हो गयी है कि तुम्हें आस–पास के परिवेश का भान नहीं, एक दिन ऐसा होगा कि तुझे वह भूल जायेगा।[1] तब उनकी सखियाँ दुर्वाशा ऋषि से क्षमा मांगती है और शाप को मुक्त करने का उपाय पूँछती हैं। वसली कागज पर खनिज रंगों से चित्र का संयोजन किया गया है, जिसकी आभा देखते ही बन रही है।

शरद भारती (उदयपुर)

1960 ई0 में राजस्थान के जयपुर में जन्म हुआ। स्नातकोत्तर पत्रोपाधि, 1987 से अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकला गुरु श्री वेदपाल शर्मा (बन्नू) जयपुर से गुरुशिष्य परम्परा चित्रकला में पारंपरिक भारतीय लघु चित्रकला की दीक्षा ली तथा पारम्परिक लघु चित्रकला में 35 वर्ष का अनुभव है। वर्तमान में ये उदयपुर में रहते हैं। ये नायिकाभेद पर चित्र बनाते हैं तथा कालिदास के लगभग सभी ग्रंथों पर इनका चित्रण है। इनके चित्रों को उनके बारिक रेखाओं और सुन्दर रंग संयोजन के लिए जाना जाता है। इन्होंने कई प्रदर्शनियों में भाग लिया। इनके संग्रह देश–विदेश के कई संग्रहालयों में लगे हुए हैं। इन्हें 2006 तथा 2010 में कालिदास सम्मान, उज्जैन, म0प्र0 से प्राप्त हुआ।

शीर्षक– शकुन्तला (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

माध्यम– वसली कागज पर खनीज रंग

इस चित्र में शकुन्तला के यौवन और ललित भाव दोनों का एक साथ समन्वय है, उनके अधर किसलय के समान लाल हैं तथा भुजाएँ वृक्ष की कोमल शाखाओं की भाँति दिखाई पड़ रही है।[2]ऐसा प्रतीत होता है कि मानो महाराज दुष्यंत दूर से ही देख रहे हैं और उनकी प्रशंसा कर रहे हैं। चित्र में शकुन्तला के भितर काम की अग्नि से ज्वर हो गया है जिसके कारण वह कमल पुष्प से बने विस्तर पर लेटी हुई हैं तथा उसके शीतलता से वह कुम्हला गयी है। कमलनाल की डोरी बांधे निश्चित रूप से शकुन्तला दुष्यंत के प्रति काम के ही प्रभाव को महसूस कर रही हैं। चित्र में सुन्दर व आकर्षक संयोजन है। हल्के रंगों एवं रेखाओं से ह्रदय को मानो परमशांति की अनुभूति हो रही है।

---

1 गुप्त, डॉ. शिवशंकर, अभिज्ञानशाकुन्लतम्, वाराणसी, पृ0 103

2 गुप्त, डॉ. शिवशंकर, अभिज्ञानशाकुन्लतम्, वाराणसी, विश्वविद्यालय, प्रकाशन, पृ0 32

शीर्षक– **प्रसादन (महादेव और पार्वती) कुमारसंभवनम्**

माध्यम– वसली कागज पर खनीज रंग

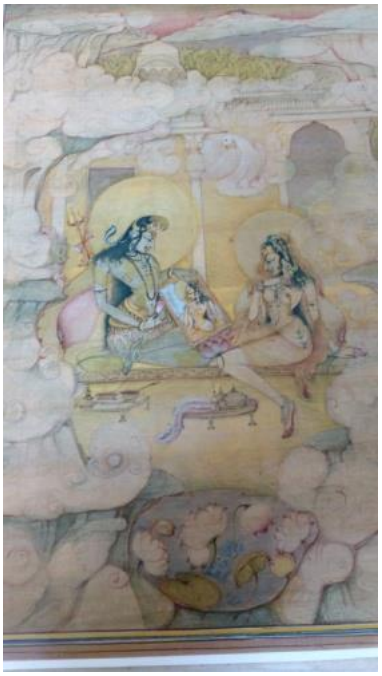

विवाह पश्चात् शिव जी ने अपनी इच्छा शक्ति से महल बनाया, जिसमें सारी सुविधाएँ थीं। शिव और पार्वती संभोग में इतने रम गये कि संसार की चेतना ही नहीं तथा बहुत सालों तक उसमें डूबे रहे। सारे देवतागढ़ परेशान हो गये क्योंकि इन दोनों के विवाह से कार्तिकेय का जन्म होना था और उसी के सेनानायक बनने मात्र से देवताओं का असुरों से कल्याण संभव हो पाता। तब देवताओं ने शिव और पार्वती के काम में विघ्न डालने की सोची क्योंकि काम से ही अग्नि की उत्पत्ति भी होती है तो इस चित्र में कपोत का रूप लेकर अग्नि, एक ताख में बैठकर प्रवेश किये। दोनों गहन महासमागम में थे। तभी उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि कोई देख रहा है। उनकी दृष्टि ज्यों ही कपोट पर पड़ी पार्वती जी की यौन ऊर्जा मुरझाए कमल की तरह हो गयी जिससे असंतुष्टी का भाव पैदा हो गया और उन्होंने शिव से शिकायत की। उनको मनाने के लिए शिव जी एक चाँदी का दर्पण उठाए और राख से अपने शरीर को साफ किये और पार्वती को दर्पण दिखाकर रिझाने लगे, जिससे वह फिर से मुस्कुराकर अपने अधरों को झुका लेती हैं। चित्र में पद्मपुष्प से अलंकरण किया गया है। पान–दान तथा विभिन्न सामग्री नीचे एक छोटी सी चौकी पर रखी हुई है एक पद्म पुष्प दोनों के बीच में खिला हुआ, जिससे प्रतीत होता है कि काम चरम पर है। इसमें वास्तु का भी रेखांकन है, जो चित्र में आकर्षण पैदा कर रहा है। रंगों में हल्का पीला, गुलाबी, हरा, नीला आँखों को शीतलता प्रदान कर रहे हैं।

पवन कुमार कुमावत (किशनगढ़)

इनका जन्म 13 जून, 1966 किशनगढ़ के मदानगंज में हुआ है। इनकी मास्टर की शिक्षा डी0ए0वी0 कॉलेज में हुई है। 30–35 वर्षों से ये कला के क्षेत्र से जुड़े रहे हैं। इन्होंने नायिका भेद पर अनेक चित्रण किया है तथा कालिदास के लगभग सभी ग्रन्थों पर अपनी रचनाओं से सबका मन मोह लिया है, जिसके लिए इन्हें कालिदास सम्मान, उज्जैन, म0प्र0 से 2005, 2010 तथा 2014 में सम्मानित किया गया। इनके चित्र देश–विदेश के कई संग्रहालयों में वहाँ की शोभा बढ़ा रहे हैं।

शीर्षक– भ्रमरवत्ति (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

माध्यम– वसली कागज पर जलरंग

इसमें नायिका (शकुन्तला) अपने प्रियतम् दुष्यंत की कल्पना भँवरे की भाँति करती हुई प्रतीत होती है। वह कभी किसी फूल तो कभी किसी अन्य फूलों पर मँडराता रहता है, उसे मानो कभी एक फूल से संतुष्टी ही नहीं मिलती परन्तु जब वह कमल के पुष्प पर बैठता है तो उसके सुगन्ध मात्र ही भँवरे के अन्दर स्थिरता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इस चित्र में शकुन्तला अपने पद में गा रही है कि हे दुष्यंत ये तेरी भ्रमर वृत्ति है, एक नायिका को पकड़ा, दूसरे को छोड़ा और अखिरी में महल में जो पटरानी है उसके साथ आलिंगन कर रहा है (यह चित्र के ऊपरी हिस्से में दिखाया गया है)। इस चित्र में ऊपर एक अलग प्रकार का संयोग है तो नीचे शकुन्तला के भितर चल रही मनःस्थिति का वर्णन किया गया है। पद्मपुष्प पर बैठा भँवरा आनन्द ले रहा है। विभिन्न फूल–पत्तियों से चित्र की आभा और सुन्दर प्रतीत होती दिखाई पड़ रही है। खनिज रंगों का संयोजन बहुत ही कोमल ढंग से किया गया है।

शीर्षक – मेघवार्ता (मेघदूतम्)

माध्यम –वसली कागज पर जलरंग

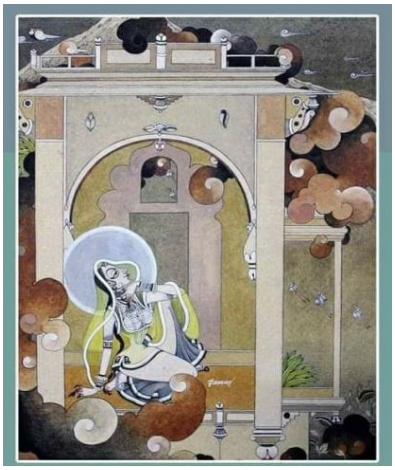

इस चित्र में यक्ष मेघ के माध्यम से अपना संदेश नायिका तक पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा है। कहता है– हे मेघ तुम चले तो जाओगे परन्तु मेरा घर कैसे पहचानोगे तथा मेरी प्रिय को कैसे पहचान पाओगे। मैं तुमको बतला देता हूँ– अल्कापुरी की इस आनन्दमयी नगरी के स्वामी कुबेर के भवन से उत्तर दिशा में मेरा घर स्थित है। मेरे घर के द्वार पर इन्द्रधनुषी आभा लिए तोरण दिखलाई देगा। घर का द्वार शंख और पद्म की

आकृतियों से अलंकृत दिखेगा। उसके भितर मंदार का वृक्ष है, उसी समीप एक बावड़ी है, जिसमें स्वर्ण आभा लिए कमल खिले होंगे तथा जिसकी सीढ़ियों पर मरकत मणियाँ जड़ी हुई हैं। मेरी नायिका घबराई हिरणी की तरह, चंचल नयनों वाली, विधाता की सबसे सुन्दर बनायी हुई युवती, मेरे वियोग में कुम्हला गयी होगी। वह मेरा चित्र बना रही होगी या कमल पुष्पों को गिन–गिन कर रख रही होगी। तुम ऐसे ही घर में प्रवेश मत करना। जब रात को वह खोई रहेगी तो मंद गर्जन से उसे जगाने का प्रयत्न करना और मेरा संदेश देना कि मैं तुम्हारे पति का मित्र हूँ और उसका संदेश लाया हूँ, जो इस प्रकार है– हे प्रिये! मैं लताओं में तुम्हारे शरीर की, हिरणी की दृष्टि में तुम्हारे चितवन की, चन्द्रमा में तुम्हारे सौन्दर्य की, मयूरों के पंखों में तुम्हारे केशों की और नदियों की तरंगों में तुम्हारे आलिंगन की कल्पना करता हूँ किन्तु दुःख इस बात का है कि किसी में भी तुम्हारी समानता नहीं पाता हूँ। इस चित्र में नायिका बैठी हुई मानो ध्यान से मेघ की बातें सुन रही है और अंदर ही अंदर प्रसन्न हो रही है। चित्र में पीला, हरा, सफेद, स्लेटी, कत्थई, येलो ऑकर रंगों का सुन्दर संयोजन किया गया है तथा भवन को अलंकरण से सजाया गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार मैंने अपने इस शोध पत्र के माध्यम से कालिदास के ग्रंथों पर आधारित नायिका के श्रृंगारिक पक्ष का चित्रण करने वाले राजस्थान के कुछ महत्त्वपूर्ण कलाकारों को एक साथ लाने का प्रयास किया है, जो कला–शोधार्थियों तथा कला विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दास, राय कृश्ण. भारत की चित्रकला. इलाहाबाद : लीडर प्रेस, 1969.
2. वैद्य, किशोरीलाल और ओमचन्द हाण्डा. पहाड़ी चित्रकला. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिकेशन हाउस, 1969.
3. वशिष्ठ, डॉ. राधाकृष्ण. मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा. जयपुर : यूनिक ट्रेडर्स, 1984.
4. अग्रवाल, डॉ. भानु. भारतीय चित्रकला के मूल स्रोत. वाराणसी : फाइन प्रिंटिंग प्रेस, 1991.
5. पाण्डे, डॉ. कमलेश दत्त. भारतीय चित्रकला में नारी रूप विन्यास. नई दिल्लीः ए0के0 बुक कारपोरेशन, 1992.
6. गंगवार, क्षेत्रपाल और संजीव कुमार सिंह. भारतीय कला में सोलह श्रृंगार. नई दिल्लीः राष्ट्रीय संग्रहालय, 2000.
7. पाण्डेय, डॉ. मिथिलेश. कालिदास ग्रंथावली. नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन, 2007.
8. पाण्डया, डॉ. संतोष. कालिदास कलासुषमा. उज्जैन : पंचायतीराज मुद्रणालय, 1958 से 2018 पर्यन्त.
9. गुप्त, डॉ. शिवशंकर. अभिज्ञानशाकुन्तलम. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2019.
10. त्रिपाठी, डॉ. रमाशंकर. मेघदूतम्. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2020.

❖◆❖